आचार्य महाप्रज्ञ

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

Monograph Series - 06

JAIN DOCTRINE OF NAYA

Prof. Anekant Kumar Jain

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

MONOGRAPH SERIES - 06

JAIN DOCTRINE OF
NAYA

Author

Prof. Anekant Kumar Jain

Editors of the Series

Prof. Samani Riju Prajna

Dr. Samani Amal Prajna

Bhagwan Mahavira International Research Center

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, Rajasthan, India

www.jvbi.ac.in

JAIN DOCTRINE OF NAYA

By: **Prof. Anekant Kumar Jain**

Editors of the Series:
Prof. Samani Riju Prajna
Dr. Samani Amal Prajna

© **Jain Vishva Bharati Institute**
(Deemed-to-be University)
Ladnun - 341 306, Rajasthan
Ph.: 01581-226110, 226230
www.jvbi.ac.in

ISBN : 978-93-83634-69-9

Edition : 2019

Price : 125/-

Printed by : Tilok Printing Press, Bikaner

Contents

		Page No.
Vice Chancellor's Note		
From the Desk of Executive Director		
Preface		
Chapter – 1	Introduction	1
Chapter – 2	The Philosophy Behind the Nayavada	3
Chapter – 3	Anekantavada and Nayavada	12
Chapter – 4	Kinds of Naya	16
Chapter – 5	Dravyarthika Naya	22
Chapter – 6	Paryayarthika Nayas	29
Chapter – 7	The Utility of Nayas in Spirituality	37
Chapter– 8	An Approach of Reconciliation	48
Chapter– 9	Conclusion	50
References		51

आचार्य महाश्रमण

विविध आयामी अवदान

सम्पादक

प्रो. दामोदर शास्त्री

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

प्रकाशक

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

शीर्षक : आचार्य महाश्रमण विविध आयामी अवदान

कॉपीराइट : जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

संस्करण : 2022 (प्रथम)

मूल्य : 400/-

ISBN : 978-93-83634-77-4

मुद्रक : मैसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर

प्रकाशक -

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं - 341 306, नागौर, राजस्थान

11. आचार्यश्री की दृष्टि में 'प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यान' 112-121
प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन

12. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में गीता और उत्तराध्ययन के विषयों में साम्य-वैषम्य 122-130
प्रो. (डॉ.) श्रेयांस कुमार जैन

13. आचार्य महाश्रमण साहित्य में 'नवधा भक्ति' 131-144
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा

14. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में 'पाप-निवृत्ति' 145-154
डॉ. जयकुमार जैन

15. आचार्य महाश्रमण की दृष्टि में आचार्यश्री महाप्रज्ञ 155-162
प्रो. धर्मचन्द जैन

16. सुखी कैसे रहें ? : आचार्य महाश्रमण की संत-दृष्टि 163-170
नरेश शांडिल्य

17. अप्रमत्त आलोक के धनी आचार्य महाश्रमण 171-179
प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा

18. आचार्य महाश्रमण के साहित्य में 'स्थितप्रज्ञता' 180-197
प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह, डॉ. जोगेन्द्र मित्र

19. आचार्य महाश्रमण का नैतिक दर्शन 198-208
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

20. समता का जैन दृष्टिकोण और आचार्य महाश्रमण 209-215
प्रो. अनेकांत कुमार जैन

21. आचार्य महाश्रमण के चिन्तन में संवेग 216-223
प्रो. बी.एल. जैन

22. Sufferings and being free from Sufferings – in the views of Ācārya Mahāśramaṇ 224-236
Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

समता का जैन दृष्टिकोण और आचार्य महाश्रमण

प्रो. अनेकांत कुमार जैन*

समता या साम्यभाव की दृष्टि से यदि जैन सिद्धांतों को देखें तो यहाँ 'समण' शब्द का अर्थ ही किया 'समणो समसुहदुक्खो'[1] अर्थात 'समण' वह है, जो सुख और दुःख में समान भाव रखता है । भगवती आराधना की विजयोदया टीका में समण का लक्षण करते हुए, अपराजितसूरि ने कहा- 'समणो समानमणो समणस्स भावो सामण्णं क्वचिदप्यनगुगतरागद्वेषता-समता समणशब्देनोच्यते' अर्थात् 'जिनका मन सम है, वह समण तथा समण का भाव 'सामण्णं' (श्रामण्य) है अथवा सामण्णं को समता कहते हैं। किसी भी वस्तु में राग-द्वेष का अभाव रूप समता 'सामण्णं' शब्द से कही जाती है। जैन धर्म तो प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और मैत्रीभाव रखने की शिक्षा देता है, बैर किसी से नहीं-

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ।।[2]

जैन धर्म का यह अमिट सिद्धान्त है कि 'अपने समान सभी को समझो' -

जह ते न पिय दुक्खं, जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
सव्वायरमुवउत्तो अत्तोवम्मेण कुणसु दयं ।।[3]

अर्थात् जैसे तुम्हें दुःख प्रिय नहीं है, वैसे ही सब जीवों को दुःख प्रिय नहीं है- ऐसा जानकर पूर्ण आदर और सावधानी पूर्वक आत्मौपम्य की दृष्टि से सब पर दया करो ।

---

*आचार्य- जैन दर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्राकृत-समय

(प्राकृत विद्या : आधुनिक संदर्भ में)

सम्पादक

डॉ. ज्योतिबाबू जैन

भारतीय ज्ञानपीठ

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थांक 95

ISBN978-93-90659-49-4

प्राकृत-समय

(प्राकृत विद्या : आधुनिक संदर्भ में)

(शोध)

संपादक : डॉ. ज्योतिबाबू जैन

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-110003

© डॉ. ज्योतिबाबू जैन

PRAKRIT-SAMAYA
(Reserach)
By Dr. Jyotibabu Jain

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003
Ph. : 011-24626467; 23241619 (Daryaganj)
Mob. : 9350536020; e-mail : bjnanpith@gmail.com
sales@jnanpith.net; website : www.jnanpith.net

First Edition : 2022
Price Rs. 600

अनुक्रम

संपादकीय –डॉ ज्योतिबाबू जैन
प्ररोचना– प्रो.सुदीप कुमार जैन

1. प्राकृत–काव्यों की मौलिक रमणीयता – प्रो.दामोदर शास्त्री/ 27
2. प्राकृत साहित्य में योग और ध्यान की परंपरा
– प्रो.भागचंद जैन भास्कर/ 34
3. प्राकृत–अध्ययन की उपयोगिता – प्रो.प्रेम सुमन जैन/47
4. प्राकृत साहित्य की परंपरा और उसकी विधाएं – प्रो.उदयचंद्र जैन/57
5. Importance of prakrit scriptures in modern times for our happiness - Dr.P.M Agrawal/ 66
6. प्राकृत पालि गाथाओं में साम्य – प्रो.धर्म चन्द्र जैन/ 76
7. आयुर्वेद में प्राकृत और संस्कृत की उपयोगिता – प्रो.ऋषभचंद जैन/ 85
8. प्राकृत आगमों में विज्ञान – प्रो. एन.एल.कछारा / 103
9. प्राकृत वाङ्मय में समत्व दृष्टि – प्रो.अशोक कुमार जैन/ 110
10. प्राकृत परम्परा के आचार्यो की समकालीन –युगचेतना
– प्रो.वीर सागर जैन/ 118
11. प्राकृत–सूक्तियों में लोकमंगल भावना – डॉ.रांका जैन/ 124
12. भारतीय साहित्य को प्राकृत का योगदान – डॉ.कमल कुमार जैन/ 130
13. प्राकृत शिलालेखों में समसामयिकता – डॉ.दिलीपधींग/ 145
14. प्राकृत आगमों के शैक्षिक संदर्भ – प्रो.जिनेंद्र कुमार जैन / 149
15. प्राकृतभाषा और आधुनिक संचार–माध्यम – प्रो.अनेकांत जैन/158
16. प्राकृत–काव्यों की समरसता – प्रो.जयकुमार उपाध्ये/ 166
17. आगमों में अंकित आचार–संहिता और पर्यावरण सुरक्षा – डॉ.अनिल कुमार जैन/174

प्राकृत भाषा और आधुनिक संचार माध्यम

प्रो. अनेकांत कुमार जैन

प्राकृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषा है, जिसने भारत की अधिकांश क्षेत्रीय भाषाओं को समृद्धि प्रदान की है। भगवान् महावीर की दिव्यध्वनि में जो ज्ञान प्रकट हुआ वह मूल रूप से प्राकृत भाषा में संकलित हैं जिन्हें प्राकृत जैन आगम कहते हैं। सिर्फ जैन आगम ही नहीं बल्कि प्राकृत भाषा में लौकिक साहित्य भी प्रचुर मात्रा में रचा गया क्योंकि यह प्राचीन भारत की जन भाषा थी।

आश्चर्य होता है कि भारत वर्ष की प्राचीन मूल मातृभाषा होने के बाद भी आज इस भाषा का परिचय भी भारत के लोगों को नहीं है। प्राकृत परिवर्तन प्रिय भाषा थी अत: वह ही काल प्रवाह में बहती हुई अपभ्रंश के रूप में हमारे सामने आई तथा कालांतर में वही परिवर्तित रूप में राष्ट्र भाषा हिंदी के रूप में, हिंदी के विविध रूपों में हमें प्राप्त होती है। प्राकृत भाषा ने लगभग सभी क्षेत्रीय भाषाओं को समृद्ध किया है।

आज भाषा के क्षेत्र में बहुत काम हो रहा है। संस्कृत, हिंदी आदि भारतीय भाषाओं के रक्षण की भी बात बहुत होती है और कार्य भी बहुत हो रहे हैं किन्तु प्राकृत भाषा की संपदा को बचाने और समृद्ध करने की दिशा में अभी वैसे कार्य न तो सामाजिक स्तर पर हो रहे हैं और न ही राजकीय स्तर पर।

आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कई भाषाओं में अपने पूरे प्रभाव पर है। यह भाषा प्रौद्योगिकी का परिणाम है। अभी पिछले कुछ वर्षों तक हम सभी हिंदी या अन्य भाषाओं में टाइपिंग को लेकर चिंतित रहते थे और टाइपिस्ट खोजते थे, टाइप होने के बाद भी वह फॉन्ट सभी जगह कम्प्यूटर पर नहीं खुलता था, तथा उस फॉण्ट में हम मैसेज, ईमेल आदि नहीं लिख सकते थे। हमें रोमन में ही हिंदी लिखनी होती थी या फिर अंग्रेजी में अनुवाद कर के मेल करना होता था, किन्तु यूनिकोड ने इन पूरी समस्याओं को हल कर दिया और आज हम अनेक भाषाओं में सन्देश टाइप भी कर लेते हैं और अनुवाद भी।

यह जो स्थिति उत्पन्न हुई है वह प्राकृत भाषा के अभ्युदय के लिए बहुत

आयरिय-अणेयंतकुमारजइणेण विरइय -

दसधम्मसारो

(दशधर्मसार)

लेखक

प्रो. अनेकान्त कुमार जैन

(युवा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित)

सम्पादक

डॉ. अरिहन्त कुमार जैन

प्रकाशक

जिन फाउण्डेशन

एवं

'पागद-भासा', नई दिल्ली

पुस्तक : **दसधम्मसारो**
Book : **DASADHAMMASĀRO**

Subject : **Prakrit & Jainism**
विषय : **प्राकृत एवं जैनविद्या**

ISBN No. : 0978-81-909686-3-8

Writer : **Prof. Dr. Anekant Kumar Jain, New Delhi**
लेखक : **डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली**

Editor : **Dr. Arihant Kumar Jain, Mumbai**
संपादक : **डॉ. अरिहन्त कुमार जैन, मुम्बई**

प्राप्ति स्थान :
1. **प्राकृत विद्या भवन,** ए 93/7 ए, नन्दा हॉस्पिटल के पीछे, छत्तरपुर एक्टेंशन, नई दिल्ली-110074
Mo.9711397716, Email-drakjain2016@gmail.com
2. **अनेकान्त-विद्या-भवनम्,** B-23/45, P-6, शारदा नगर कॉलोनी, खोजवां, वाराणसी-10
Mo.9450179254, Email-anekantjf@gmail.com

मूल्य : 101/- (सहयोग राशि पुनः प्रकाशन हेतु)
Can pay to 9868098396@paytm

© लेखकाधीन

संस्करण : **सन् 2023** (1000 प्रतियाँ)

प्रकाशक : **जिन फाउण्डेशन,** नई दिल्ली एवं
'पागद-भासा' (प्राकृत भाषा की प्रथम पत्रिका), नई दिल्ली

मुद्रक : **देशना कम्प्यूटर्स**
मालवीया इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर (राज.)
मो. 9928517346

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	भूमिका	7
2.	धर्म का स्वरूप	11
3.	धर्म के दशलक्षण	13
4.	उत्तम क्षमा	14
5.	उत्तम मार्दव	16
6.	उत्तम आर्जव	18
7.	उत्तम शौच	20
8.	उत्तम सत्य	22
9.	उत्तम संयम	24
10.	उत्तम तप	26
11.	उत्तम त्याग	28
12.	उत्तम आकिञ्चन्य	31
13.	उत्तम ब्रह्मचर्य	34
14.	क्षमावाणी पर्व	36
15.	दशलक्षण धर्म आराधना	41

जियो बाहर लेकिन रहो भीतर

जीववहो अप्पवहो हिंसा ण हवइ सुद्धोवओगम्मि।
धारयदु खलु अहिंसा जीउ संसारम्मि ठिदो अप्पम्मि।।

जीववध आत्मवध ही है, (इसलिए सभी जीवों की हिंसा से बचो) शुद्धोपयोग में हिंसा नहीं होती है, इसलिए अहिंसा (शुद्धोपयोग) को अवश्य धारण करो और जियो भले ही संसार में लेकिन रहो अपनी आत्मा में अर्थात् जियो बाहर लेकिन रहो भीतर।

- (जिणधम्मसयगं, गाथा 42)